प्रातःक्लास 18.3.68 ओमशांति शिवबाबा याद है?

ओमशांति। शिवभगवानुवाचः शालीग्राम समझते हैं कि शिवबाबा हमको पढ़ाने आते हैं। बच्चे जानते हैं कि वही सृष्टि के आदि,मध्य,अंत को जानते हैं। बच्चों को अभी कोई नई बात नहीं लगती है। समझ में आ गया मनुष्य सभी भूले हुए हैं। विद्वान ,पंडित आदि शास्त्र पढ़ने वाले आदि सभी भूले हुए हैं। जिसने पढ़ाया उनके बदली पहले नम्बर में पढ़ने वाले का नाम डाल दिया है। तुमको पहले2 इन बात पर ही बेवकूफ बनाना है। कितनी बड़ी मूर्खता है। पढ़ाने वाले के बदली जो नम्बरवन में पास हुआ है उसका नाम गीता में डाल दिया है। तुम अभी समझते हो कि भारतवासी कितने पतित,मूर्ख हैं। पहले नम्बर में गीता है जिसमें भगवानुवाच है। वह झूठी तो सभी शास्त्र झूठे हो जाते। सर्वशास्त्रमई गीता कहते हैं ना। वह झूठी तो जो भी उनके बाल–बच्चे शास्त्र हैं भारत के सभी झूठे हो जाते। भारत की ही शास्त्रों की बात है। और धर्मों के शास्त्र की नहीं। भूल ही यहां भारत के शास्त्रों में है। पहले2 तो यह सिद्ध करना है। सिवाय तुम्हारे और कोई सिद्ध नहीं कर सकेगा। तुमको यह शुद्ध गर्व है। दोष तो सारा विद्वानों का ही है। यह भी ड्रामा में नूंध है। इसमें कोई नफरत नहीं कर सकते हैं। बच्चे जानते हैं अनादि ड्रामा है। यह फिर भी रिपीट होगा। तुम मनुष्यमात्र को सुधारने का भी पुरुषार्थ करते हो। मनुष्य जब सुधरते हैं तो दुनियां भी सुधरती है। सतयुग है सुधरी हुई दुनिया और कलियुग है अनसुधरी हुई दुनियां। यह भी तुम बच्चे अच्छी रीत समझते हो और धारण कर समझाने लायक बनते हो। इसमें भी बड़ी रिफाइननेस चाहिए। अभी तुम बन रहे हो। बाप तुमको कितना रिफाइन करते हैं ,सुधारते हैं। कुछ भी नहीं जानते हैं। बाप कहते हैं जब सुधार की जाती है तो फिर मुझे सुधारने की दरकार नहीं रहती। तुम अनार्य बन पड़े थे। अभी आर्य अर्थात् आदि सनातन देवी देवता बनना है। सो तो सतयुग में ही होंगे। वह आर्य अर्थात् सुधरे हुए थे। अनसुधरेली उन्हों की पूजा करते हैं। समझते नहीं हैं कि हम क्यों उन्हों को सुधरेली कहते हैं? किसकी बुद्धि में नहीं आता है। है तो मनुष्य ही। जो सुधरेली आर्य थे वही अभी अनसुधरेली बने हैं। आर्य और अनार्य हैं। बाकी वह जो आर्यसमाजी हैं वह तो मठ पंथ हैं। सारा झाड़ है। झाड़ से क्लीयर समझ जाते हैं। यह है मनुष्य सृष्टि का झाड़, जिसकी आयु 5000वर्ष है। जिसका नाम कल्प वृक्ष रख दिया है ;परंतु कल्प वृक्ष अक्षर से मनुष्यों की बुद्धि में कोई झाड़ नहीं आता है। तुमको झाड़ के रूप में समझाया है कि इनकी आयु 5000वर्ष है। कल्प अर्थात् 5000वर्ष। वह तो कह देते हैं कल्प लाखों वर्ष का है। बाप कहते हैं नहीं। यह है ही 5000वर्ष का। और कोई ऐसे कह न सके। कितनी आयु सुनाते हैं, कोई कितनी। पूरा समझाने वाला कोई होता नहीं। आपस में कितना शास्त्रवाद करते हैं। बनारस में किया था। जो हाइएस्ट विद्वान होते हैं उन्हों की जैसे आपस में लड़ाई होती है। वाद–विवाद करते हैं संस्कृत में। कोई बच्चा संस्कृत जानने वाला हो तो वहां जाकर समझकर आवे वह क्या वाद–विवाद करते हैं। हो भी महावीर। समझदार। जांच–जूंचकर सुनकर आवे। ऐसे2 बोलते थे। तुम्हारी लेन–देन तो है ही यह। तुम सेमीनार करते हो ना। इनको रूह–रूहान कहा जाता है। प्रश्न–उत्तर समझने लिए करते हो। बाबा ने यह समझाया है तुम्हारी है यह रुहानी रुह–रुहान। बाप जो तुमको पढ़ाते हैं उससे टॉपिक्स निकाल तुम सुनाते हो। तो वह लोग क्या सुनाते हैं वह भी जाकर सुनना चाहिए। इसमें हर्जा नहीं है। बाप को सुनाना चाहिए इस प्रकार वाद–विवाद चलाता है। यह भी जानते हैं उन्हों की है झूठी वाद–विवाद। तुम्हारी है सच्च की बात। पहले2 तो यह समझानी देनी चाहिए गीता का भगवान कौन? भगवान बाप को भूलने कारण बिल्कुल ही चट खाते में आ गए हैं। तुम बच्चों का तो बाप पर लव है ना। बाप को याद करते हो। बस, बाबा ही प्राण दान देने वाला है। नालेज का दान ऐसा देते हैं जो हम क्या से क्या बन जाते हैं। तो बाप पर लव चाहिए ना। बाबा हमको ऐसी2 बातें सुनाते हैं। शास्त्र सभी हैं झूठे। हम कृष्ण को कितना याद करते थे। वह तो कुछ देता नहीं है। नारायण को याद करते हो। याद करने से कुछ होता है क्या? हम

तो कंगाल ही हो गए हैं। एकदम इनसालवेंट बन पड़े हैं। देवताएं कितने सालवेंट थे। अभी तो सभी आर्टीफीशियल चीजें हो गई हैं, जिसका दाम ही नहीं था। उनका आज बहुत दाम हो गया है। वहां तो अनाज आदि की दाम की बात ही नहीं। सभी को अपनी2 जमीनदारी सभी कुछ मिल जाता है। कोई अप्राप्त वस्तु नहीं होती जिसकी प्राप्ति के लिए पुरुषार्थ करना पड़े। इतना भण्डारा भरपूर कर देते हैं। बाप कहते हैं मैं तुम बच्चों का भण्डारा भरपूर करता हूं। तुमको ऐसी नालेज देता हूं , जिससे तुम्हारा भण्डारा भरपूर हो जाता है। तुम्हारी बुद्धि में है। नालेज इज सोर्स ऑफ इनकम कहा जाता है। नालेज ही वास्तव में सभी कुछ है। इस पढ़ाई से तुम कितना ऊँच बनते हो। पढ़ाई का भण्डार है ना। वह टीचर्स पढ़ाते हैं। उनसे तो अल्पकाल का सुख मिलता है। तुमको इस पढ़ाई से 21जन्म का सुख मिलता है। तो बच्चों को खुशी होनी चाहिए ना। यह समझने में भी टाइम लगता है। जल्दी कोई समझ नहीं सकते। कोटों में कोऊ ही निकलते हैं। आधा कल्प सभी मनुष्य एक/दो को गिराते ही आये हैं। बढ़ाने वाला तो एक बाप ही है। बेहद के पढ़ाने वाले बदली हद के पढ़ाई पढ़ने वाले का नाम डाल दिया है। दुनियां इन बातों को कुछ भी नही जानती। कहते भी हैं भगवानुवाचः पढ़ाकर गए फिर उनका कोई शास्त्र रहता नहीं। सतयुग में कोई शास्त्र है नहीं। यह सभी हैं भक्तिमार्ग के शास्त्र। वंडर लगता है। यह कौन है जिसके लिए कहते हैं व्यास भगवान। वह भगवान तो है नहीं। अभी बाप रास्ता बताते हैं। कहते हैं भक्तिमार्ग का भूसा बुद्धि से निकालो। यह सब कर्मकांड के शास्त्र हैं। तो पढ़कर कर्मकाण्ड करते रहते हैं। गीता भगवद,वेद–शास्त्र आदि बहुत अनेका अनेक हैं। जितना बड़ा झाड़ है उतना बड़ा भक्ति का झंझट है। यह डार–टार न हो तो झाड़ का नाम ही न हो। तो यह भी धारण करने की बातें हैं। तुम धारण करते हो। पढ़ाने वाला तो पढ़ाकर गुम हो जाता है। बाकी पढ़ने वाले आकर विश्व का मालिक बनते हैं। कितनी नई बात है। एक भी बात शूद्र कोई नहीं जानते। कोई की बुद्धि में बैठता ही नहीं। आदि सनातन देवी–देवता धर्म के नहीं हैं। अभी तुम समझते हो हम आर्य बन रहे हैं। पढ़ाई से सुधर रहे हैं। जैसे बाप नालेजफुल वैसे तुम भी नालेजफुल बनते हो। टीचर के पास तो सारी नालेज होती है ना। स्टुडेंट में नम्बरवार होते हैं। कोई पास होते हैं,कोई फेल होते हैं। यह है बेहद का बड़ा इम्तहान। तुम जानते हो हम अच्छी तरह से पढ़ेंगे तो कल्प कल्पांतर अच्छा पढ़ेंगे। अच्छा पढ़ने वाले ही ऊँच पद पाते हैं। नम्बरवार सभी जावेंगे। सारा क्लास ट्रांसफर होता है। तो नम्बरवार जाकर बैठते हैं ना। यह ज्ञान भी आत्मा है। अच्छा वा बुरा संस्कार आत्मा में है। शरीर तो मिट्टी हो जाता है। जो कहते हैं आत्मा निर्लेप है उनको तो 100प्रतिशत तमोप्रधान कहेंगे। 100प्रतिशत सतोप्रधान, 100प्रतिशत तमोप्रधान कौन है यह भी तुम समझते हो। बड़े2 हिरण्यकश्यप भी हैं ना, जो कहते हैं भगवान किसको कहते हो? हम ही भगवान हैं। हमको ही याद करो। इसलिए इनका नाम ही हिरण्यकश्यप रखा है। ऐसे बड़े2 जो हैं वह समझेंगे पिछाड़ी में कि बरोबर इन्हों को तो बाप पढ़ाते हैं तब मालूम पड़ेगा। कृष्ण भगवान नहीं है। सभी आत्माओं का बाप एक है। इस समय तुम नहीं समझा सकते हो। पहले तो गरीबों को ही उठाना पड़े। जब बहुत आ जावेंगे , उन गुरुओं आदि के भी अच्छे अनन्य आवेंगे। तब ही उन सभी की बुद्धि खुलेगी। देखेंगे यह तो हमारे पत्ते निकलते जाते हैं। यहां के जो होंगे वह निकलते आवेंगे। बाप आकर नया झाड़ शुरू करते हैं। जो और2 धर्म में जाकर पड़े हैं वह वह सभी लौटेंगे। फिर भी अपने भारत में ही आवेंगे। आगे चलकर तुम समझते जावेंगे। अभी बाहर से सभी को धक्का मिलता रहता है। कोई भी बात सुनते नहीं। जहां2 बाहर वाले हैं सभी को भगाते रहते हैं। समझते हैं यह बहुत धनवान हो गए हैं। यहां वाले गरीब हो गए हैं। तो सभी को भगाते रहते हैं। बिचारे सभी को अपने2 धर्म में जाना है। विलायत से भी भगावेंगे। सभी अपने तरफ भागेंगे। विलायत में कोई मरते हैं तो एरोप्लेन में यहां ले आते हैं ;क्योंकि यह भारत है फर्स्टक्लास नम्बरवन भूमि। इन जैसी पवित्र भूमि हो नहीं सकती। भारत में ही यह नई वर्ल्ड थी।

इस समय तुम इनको वायसलेस वर्ल्ड नहीं कह सकेंगे। अभी है विषस वर्ल्ड। इसलिए बुलाते हैं कि हे पतित–पावन आकर पावन बनाओ। भल दुनियां तो यही है ; परंतु इस समय दुनिया पावन तो नहीं है ना। पावन आत्माएं हैं मूलवतन में। वह है ब्रह्म महतत्व। सभी पावन बन वहां ही जावेंगे। फिर नम्बरवार आवेंगे पार्ट बजाने। आदि सनातन देवी–देवता धर्म का भी फाउंडेशन है। फिर इनसे तीन तबक्के निकलते हैं। यह जो ब्राह्मण धर्म है यह कोई ट्यूब नहीं है। पहले यह फाउंडेशन फिर यह तीन ट्यूब्स निकलती हैं। मुख्य है चार धर्म। सबसे अच्छे ते अच्छा है यह ब्राह्मण धर्म। बच्चे जानते हैं इन्हों की बहुत भारी महिमा है। हीरे जैसा तुम यहां बनते हो। बाप तुमको पढ़ाते हैं तो तुम कितने बड़े हो। देवताओं से तुम ब्राह्मण बड़े नालेजफुल हो। यह वंडर है ना। हम जो नालेज लेते हैं वह हमारे साथ चलती है। फिर वहां नालेज को ही भूल जाते हैं। अभी तुम समझते हैं पहले हम क्या पढ़ते थे, अभी क्या पढ़ रहे हैं। आई.सी.एस. वाले पहले क्या पढ़ते, बाद में क्या पढ़ते हैं। बहुत फर्क रहता है। तुमको आगे चलकर बहुत प्वाइंट्स मिलती रहेंगी। अभी थोड़े ही बतावेंगे। पार्ट ही आगे सुनने का है। बुद्धि में रहता है। नालेज का पार्ट पूरा होने का होगा तो हम भी उस समय बाबा के ज्ञान को धारण कर लेंगे। फिर हमारा पार्ट स्वर्ग में शुरू हो जावेगा। उनका पार्ट पूरा हो जावेगा। यह बुद्धि में बहुत अच्छी रीत धारण चाहिए। सिमरण करते रहो, मुख्य बात तो बाप को याद करते रहो। याद न होगी तो पद भी कम हो जावेगा। बाप को याद करते2 शरीर का भान निकल जावेगा। सन्यासी भी इसी अवस्था का अभ्यास करते हैं। बैठे2 देह को त्याग देते हैं ;परंतु उन्हों का रास्ता ही रांग है। इसलिए फिर जन्म लेना पड़ता है। फालोवर्स समझते हैं वह ब्रह्म में लीन हो गया। फिर नहीं आ सकते। बाप समझाते हैं वापस कोई भी जा नहीं सकते। वास्तव में ब्रह्म को याद करना ही रांग है। हम राइट हैं। एक भी वापस जा नहीं सकता। तुम सन्यासियों आदि को भी कह सकते हो। पिछाड़ी को सभी जब स्टेज पर आ जावेंगे। फिर घर जावेंगे। वह है हद का विनाशी नाटक। यह है बेहद का अविनाशी। तुम बहुत अच्छी तरह से समझा सकते हो। यह ड्रामा जूं मिसल चलता रहता है। वह तो फिर छोटे2 ड्रामा बैठ बनाते हैं। झूठे फिल्म भी बैठ बनाते हैं। उनमें करके थोड़ी बहुत सच्ची बात होती है। जैसे विष्णु अवतरण का ड्रामा दिखाते हैं। ऐसे तो नहीं कोई ऊपर से शररर कर आते हैं। ल0ना0 पार्ट बजाते ही हैं। बाकी ऊपर से कोई ऐसे आते ही नहीं। अभी तुम बच्चे समझते हो हमको बेहद का बाप पढ़ा रहे हैं। और कोई मनुष्य नहीं जो समझ सके। बिल्कुल ही बेसमझ हैं। तुम भी कहेंगे हम भी तुच्छ बुद्धि थे। कुछ भी नहीं जानते थे। अभी बाप ने समझाया है तो कपाट ही खुल गया है। इतना समय जो कुछ सुना वह कोई काम का नहीं था। और ही गिरते गए। इसलिए तुम दिखाते भी हो। आपे ही लिखकर देवे तब समझा जाये कुछ बुद्धि में बैठा है। बाहर से नये आते हैं तो फार्म भराया जाता है। तो मालूम पड़े हमारे कुल का है। मूल बात है (का)बाप को जानना। समझाते हैं कल्प2 बरोबर बाप आकर हमको पढ़ाते हैं। तो समझें हमारे कुल का है। यह भी पूछना है कब से पवित्र रहते हो। अगर जवान लड़का है , कहते हैं 6मास में पवित्र रहते है। विश्वास नहीं करना चाहिए। विषय सागर में गिर पड़ते हैं। वह जल्दी नहीं सुधरते हैं। घड़ी2 कशिश होती है। माया पकड़ लेती है। देखती है कच्चा है तो हप कर लेती है। गज को ग्राह हप करते हैं ना। कैसे अच्छे2 महारथी थे। माया एकदम सारा अंदर हप कर गई। शास्त्रों में यह मिसाल भी अभी की है। इनको किसको भी पता नहीं है। मंदिर में जाओ वहां भी ऐसे महारथी ,घोड़ेसवार,प्यादे हैं। तुम बच्चे अपना ही यादगार देखते हो। हम यह बन रहे हैं। फिर तुम्हारी भक्ति उड़ जाती है। समझते हो यह तो ईडियट है। जो जाकर माथा टेकते हैं। तुम कहां भी माथा नहीं टेकेंगे। तुम झट पूछेंगे इनके बायोग्राफी को बताओ। कहां गए? जरूर तुम समझते हो तब तो पूछते हो ना। बाप ने तुम बच्चों को कितना नालेजफुल बनाया है। तो इतना नशा रहना चाहिए ना। पास विद ऑनर आठ होते हैं। यह तो बहुत बड़ा इम्तहान है। अपन को देखना

चाहिए हमारी आत्मा पवित्र बनी है? बैटरी भरेगी तब जब योग पूरा होगा। मूल बात है यह। बाप से योग होगा तब ही सतोप्रधान बनेंगे। कितना क्लीयर समझाते हैं। तमोप्रधान आत्मा तो वापस जा नहीं सकती। यह भी ड्रामा बना हुआ है। वहां जनावर आदि भी कोई भी दुःख देने वाली चीज नहीं होती। गइयां आदि भी वहां की बड़ी सुंदर होती हैं। कृष्ण के साथ कितनी सुंदर गइयां दिखाते हैं। बड़े आदमियों का फर्नीचर भी फर्स्ट क्लास होता है ना। वहां की गइयां भी बहुत अच्छी दूध देती थीं। दूध की नदियां बहती थीं। अभी वह हैं नहीं। वहां का नाम भी है कपला गऊ। दिखाते हैं गइयां चोरी कर ले गए। अभी तुम समझते हो तुमको चोरी कर ले जाते थे ना। तो अभी तुम्हारी बुद्धि में यह खयालात रखनी चाहिए। तुम नालेजफुल हो गए हो। इस दुनियां को तुम तुच्छ समझते हो। यह तो छी2 डर्टी दुनियां है। गंद लगा पड़ा है। इनमें सारा कचड़ा स्वाहा हो जाना है। बहुत तमोप्रधान कचड़ा है। सारा किचड़ा निकल फिर स्वच्छ बन जावेंगे। अपनी राजधानी में हम जाते हैं। कितनी स्वच्छ होगी। नाम ही है स्वर्ग। तुमको कितनी खुशी होती है। बाबा ने समझाया था तुम हास्पिटलों में डाक्टरों की भी कान्फ्रेंस मंगा सकते हो। हम ऐसी दवाई देते हैं जो 21जन्म लिए कब मनुष्य बीमार नहीं होता। शरीर होते भी कोई बीमारी न रहेगी। हम ऐसी बूटी देते हैं। सुनकर वंडर खावेंगे और सुनने लिए तुम्हारे पास आवेंगे। अभी बाप कहते हैं तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। बाप की याद से ही सतोप्रधान बनेंगे। यह है नम्बरवन दवाई। इससे ही विकर्म विनाश होंगे। जो इस कुल के होंगे उन्हों की बुद्धि में अच्छा बैठ जावेगा। बीमारों को दुःख होता है ना। इसलिए हास्पिटल में जाकर समझाओ। हेल्थ मिनिस्टर को समझाना चाहिए। वैश्याओं आदि का कोई मिनिस्टर नहीं। हास्पिटल तो बहुत हैं। उन्हों के जो बड़े हैं उनको उठाना चाहिए और एज्युकेशन मिनिस्टर आदि को समझाना चाहिए। इस नालेज के सिवाय किसकी भी चलन अच्छी होगी ही नहीं। ऐसे2 बच्चों को सर्विस का बहुत खयाल रखना चाहिए। धन है तो सेवा करनी चाहिए। यह है ज्ञानमार्ग की रुहानी सेवा। धन है तो इसी में ही लगाते जायें। ऐसे2 को निमंत्रण देना चाहिए। सन्यासियों से नहीं मिलना है। मिनिस्टर्स आदि तो बहुत हैं ना। आगे चलकर तुम्हारे पास ढेर के ढेर आवेंगे। स्थापना तो होनी है ना। बीच में थोड़े ही खिट2 होगी। बच्चियां कहती हैं हमको बहुत मारते हैं। तंग करते हैं। बाबा आप अपने शरण में लो ;परंतु इसमें भी बड़ी खिट2 होती है। गवर्मेंट की खिट2 होती है। फिर अखबारों में धमचक्कर मचा देते हैं। तो बांधेलियों को बंद कर देते हैं। इसलिए बड़ा खबरदारी से कदम उठाना पड़ता है। एक के कारण बहुत बंद हो जाते हैं। अखबार से फायदा भी है तो नुकसान भी है। उन्हों को तो कोई कुछ कहे तो लिख देते हैं। खुद में तो बुद्धि है नहीं। तो खयालात चलती है कैसे युक्ति रचें? भौंक बंद करने लिए भी युक्तियां होती हैं ना। तुम्हारा तो आवाज़ विलायत तक उठा हुआ है। कोई भी मानते नहीं हैं कि मनुष्य पवित्र कैसे रह सकते हैं। कच्चे जो हैं वह तो कोई को समझा नहीं सकते। वहां 5विकार ही नहीं। वह है ही सम्पूर्ण निर्विकारी। बड़ा युक्ति से समझाना पड़ता है। इस पर ही कहते हैं ल0ना0 आदि को बच्चे नहीं होते हैं क्या? अरे, वहां तो रावण होता ही नहीं । वह है ही रामराज्य। निर्विकारी दुनियां। तुमको समझानी कितनी मिलती है। तुम्हारा भी विचार–सागर–मंथन चलना चाहिए कैसे, किसको समझावें, क्या2 टॉपिक रखें। ड्रामा के प्लैन अनुसार अच्छे2 बच्चे दिल पर चढ़ते जाते हैं। गले का हार बनते जाते हैं। रुद्र शिव तुम बच्चों को बैठ पढ़ाते हैं। उनके गले का हार बनना है। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। सर्विस पर ही सारा मदार है। कोई छिप नहीं सकता। किसकी तकदीर में ही नहीं तो तदबीर क्या करे? जो अच्छी रीत समझते हैं ,धारणा अच्छी होती है। धारणा ही नहीं होती तो जरूर बुद्धि जरूर कहां न कहां दौड़ती रहती है। यह है गॉड फादरली रुहानी नालेज। इनको स्प्रीचुअल यूनिवर्सिटी भी कह सकते हो। गॉड फादर को स्प्रीचुअल नालेज भी कहा जाता है। तुम स्प्रीचुअल यूनिवर्सिटी लिखेंगे ,कोई एतराज नहीं करेंगे। बोर्ड में भी वह अक्षर मिटाकर यह लिख देंगे। ट्रायल करके देखो। लिखो गॉडफादरली स्प्रीचुअल यूनिवर्सिटी। इनके एम ऑब्जेक्ट यह है। गॉडफादरली वर्ल्ड स्प्रीचुअल यूनिवर्सिटी। ओम।